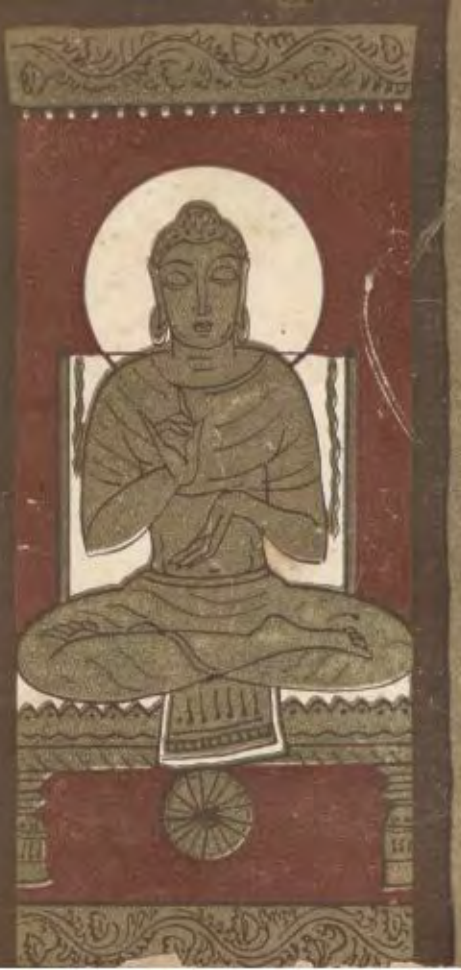

भगवान् बुद्ध

चित्रमय

सन्तराम बत्स्य

कपिलवस्तु के राजा महाराज शुद्धोदन
की पत्नी मायादेवी के गर्भ से एक
बालक का जन्म हुआ।
बालक का नाम सिद्धार्थ रखा गया।

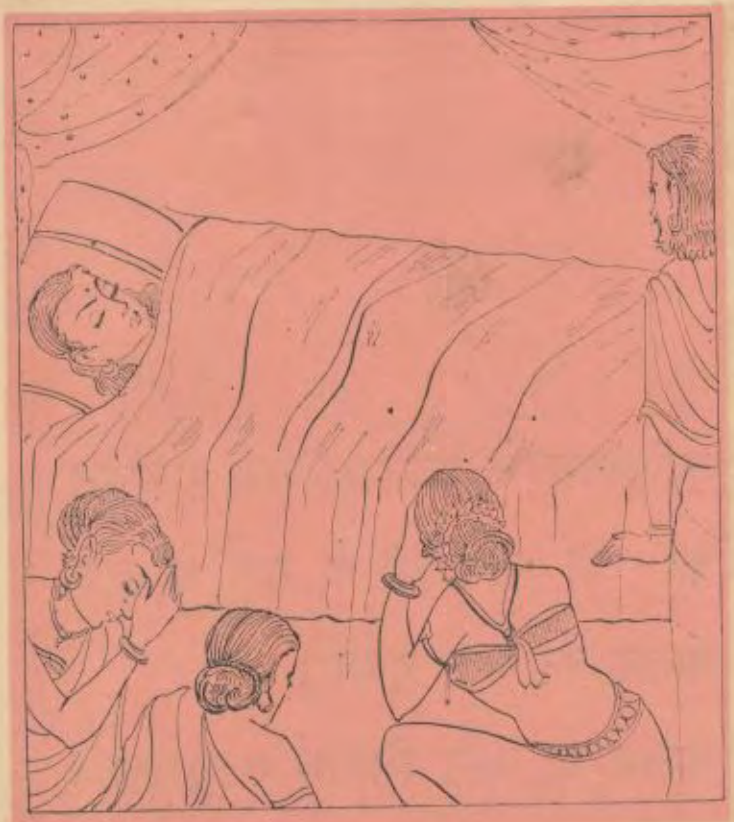

बालक पैदा होने के पाँच-सात दिन बाद मायादेवी की मृत्यु हो गई।

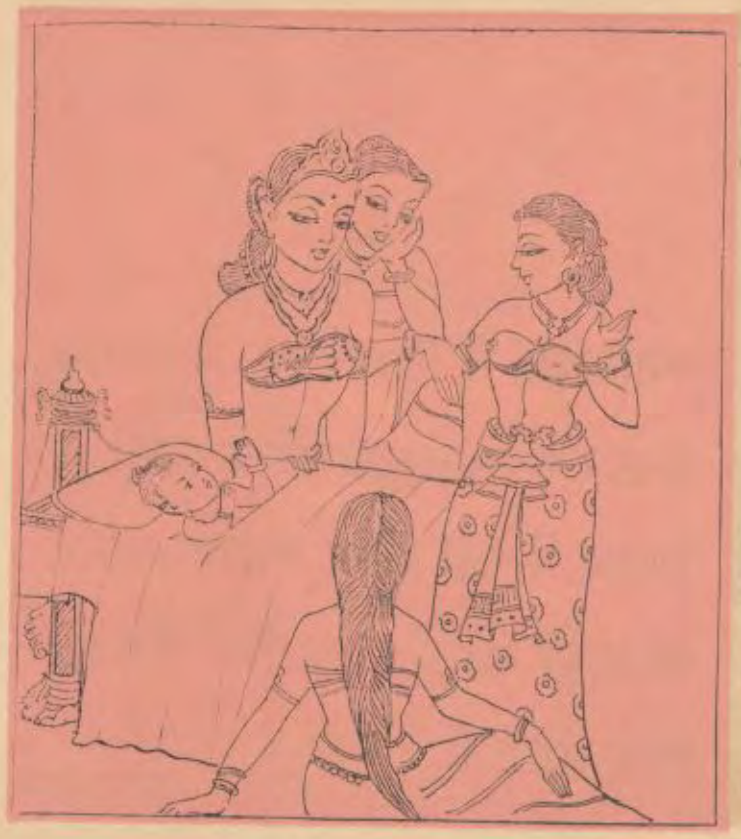

सिद्धार्थ का पालन-पोषण उसकी मौसी महाप्रजापति गौतमी करने लगी। वह मायादेवी की बहन थी।

ज्योतिषियों ने सिद्धार्थ का जन्म-लग्न देखकर बताया—यह बालक ज्यादा देर गृहस्थ में नहीं रहेगा। संसार-प्रसिद्ध महापुरुष बनेगा। या फिर चक्रवर्ती राजा होगा।

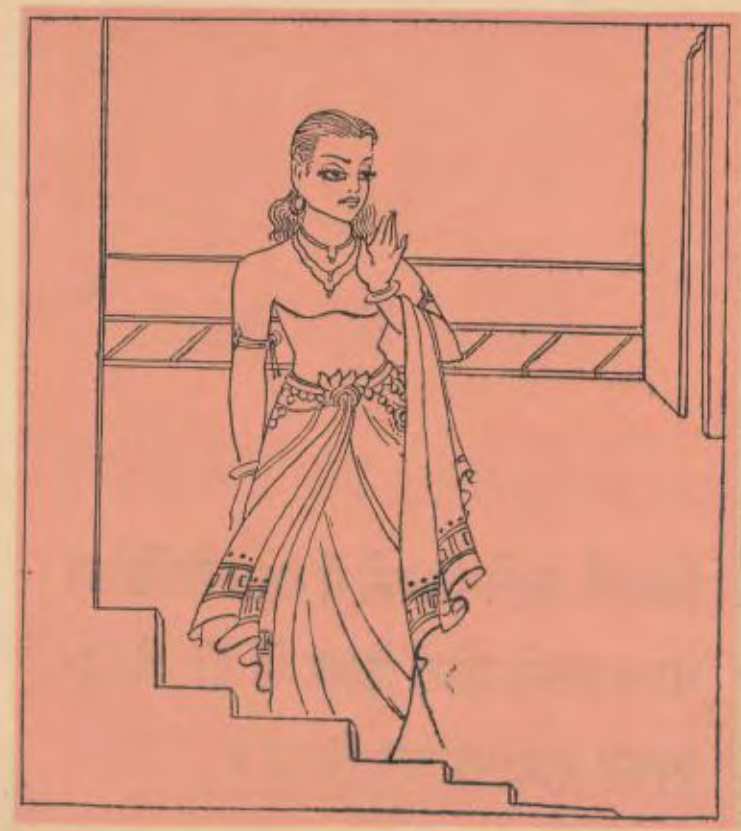

वह बालक बड़ा होनहार था। उभरा हुआ माथा, चौड़ी छाती, लम्बी बाँहें, बड़ी-बड़ी आँखें।

सारे लक्षण महापुरुषों जैसे थे।

सिद्धार्थ पढ़ने-लिखने में बहुत होशियार था। उसने छोटी उमर में ही विद्याध्ययन समाप्त कर लिया।

फिर हथियार चलाना सीखने लगा। वह हथियार चलाने में भी एक ही था। बहादुरी में उसके सामने कौन ठहर सकता था !

महाराज शुद्धोदन ज्योतिषियों की बात नहीं भूले थे। उन्हें इस बात की चिन्ता रहती कि राजकुमार राज-पाट छोड़ कहीं चला न जाए।

इसलिए महाराज राजकुमार को महलों से बाहर नहीं भेजते थे। उनका विचार था कि कोई बूढ़ा, रोगी, दुःखी, मरा हुआ राजकुमार की नजर न पड़े।

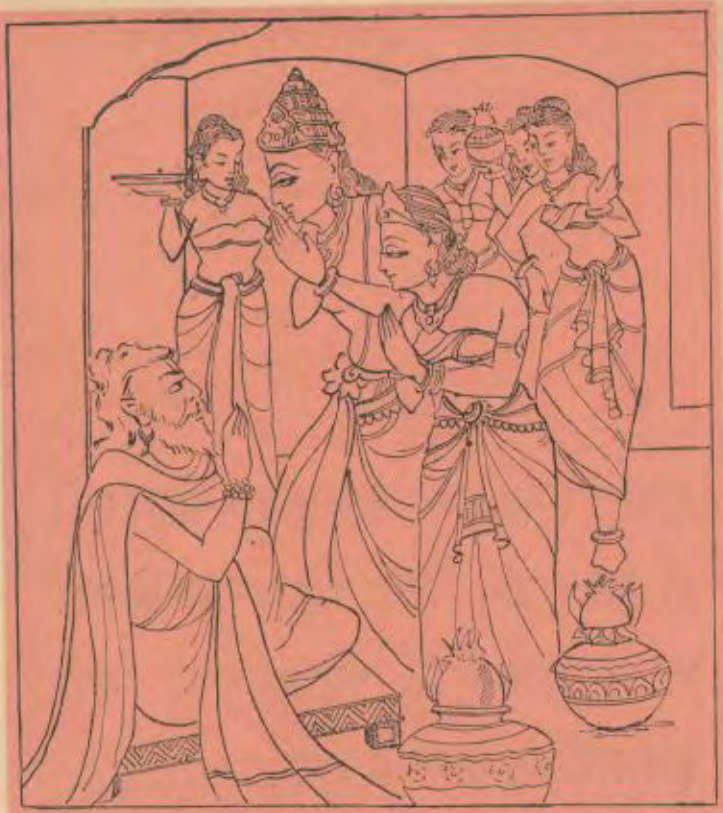

सोलह वर्ष की अवस्था में यशोधरा नाम की राजकुमारी से सिद्धार्थ का विवाह कर दिया गया।

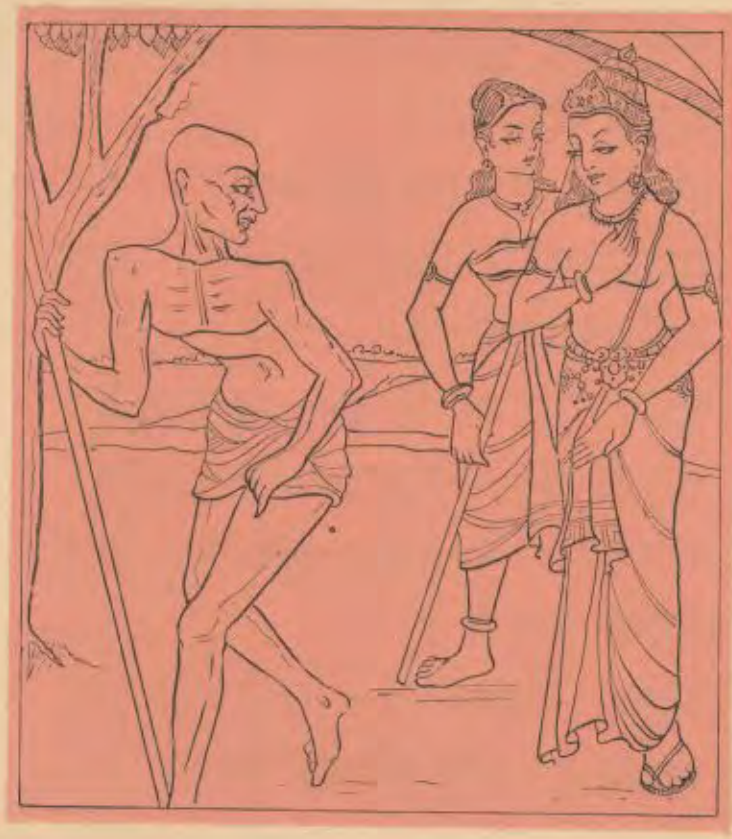

एक बार सिद्धार्थ नगर देखने निकले। उन्हें एक बूढ़ा दिखाई दिया। वह लाठी के सहारे बड़ी कठिनाई से चल रहा था।

राजकुमार ने सारथी से पूछा—यह कमर झुकाए, लाठी के सहारे क्यों जा रहा है ?

सारथी ने कहा—यह बूढ़ा है। बुढ़ापे में सबकी यही दशा होती है। शरीर कमज़ोर हो जाता है।

दूसरी बार घूमने निकले तो एक रोगी दिखाई दिया।

वह पीड़ा से कराह रहा था।

राजकुमार ने पूछा—सारथी! यह क्यों कराह रहा है?

सारथी ने उत्तर दिया—यह रोगी है। रोग की पीड़ा के कारण ऐसा कर रहा है।

राजकुमार ने पूछा—तो क्या रोग सबको होते हैं?

सारथी बोला—रोग सभी को लग सकता है। मुझे भी और आपको भी।

तीसरी बार सिद्धार्थ ने एक मुर्दे को देखा उसके भाई-बन्धु रोते-चिल्लाते शव को श्मशान की ओर ले जा रहे थे।

सिद्धार्थ ने पूछा—यह क्या बात है ?

सारथी बोला—यह मर गया है। इसे जला देंगे। रोने वाले इसके भाई-बन्धु हैं।

एक दिन सभी मरेंगे। कोई आगे कोई पीछे।

बूढ़े सभी होंगे, सब रोगी हो सकते हैं।

एक दिन सब को मरना ही है।

सिद्धार्थ राजमहल में वापस लौटकर
सोचने लगे—
बुढ़ापे से छुटकारा कैसे मिल सकता है ?
लोगों को रोगों से कैसे बचाया जाए ?
मौत से कैसे मुक्ति मिल सकती है ?
मुझे क्या करना चाहिए ?

सिद्धार्थ की पत्नी यशोधरा के गर्भ से
एक पुत्र उत्पन्न हुआ।
उसका नाम राहुल रखा गया।
कई दिन बाद सिद्धार्थ रात के समय
सोती हुई पत्नी और पुत्र को छोड़कर
चल दिए।

नदी के तट पर जाकर उन्होंने अपने गहने-कपड़े उतार दिये। सेवक को गहने-कपड़े और घोड़ा देकर लौटा दिया।

वे कई जगह घूमे। पर मन को शान्ति नहीं मिली।

अन्त में बोधि वृक्ष के नीचे आसन लगाया।

इस स्थान पर उन्हें 'बोध' (ज्ञान) प्राप्त हुआ। वे 'बुद्ध' ज्ञानी हुए।

'सिद्धार्थ' तब 'बुद्ध' बन गए।

भगवान् बुद्ध ने सारनाथ में अपना पहला उपदेश भिक्षुओं को दिया। बाद में उन्होंने विद्वानों, तपस्वियों और अनेक राजाओं को उपदेश दिया।

भगवान् बुद्ध 'बोधि' प्राप्ति के पश्चात् कपिलवस्तु लौटे।

उनकी पत्नी यशोधरा ने उनसे दीक्षा ली।

छोटा बच्चा राहुल भी दीक्षित हुआ।

धर्मं शरणं गच्छामि

(मैं धर्म की शरण जाता हूँ।)

संघं शरणं गच्छामि।

(मैं संघ की शरण जाता हूँ।)

बुद्धं शरणं गच्छामि।

(मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ।)

भगवान् बुद्ध के उपदेशों का सार यह है—

१. सब कुछ क्षणिक और दुःखरूप है।

२. संसार के क्षणिक पदार्थों की इच्छा ही दुःखों का कारण है।

३. तृष्णा का नाश होने से दुःखों का नाश होता है।

४. सुख-दुःख, वैर-प्रीति—इनसे छुटकारा पाने से मुक्ति होती है।

५. वे जीव-दया को सबसे बड़ा धर्म बताते थे। मन, वाणी और कर्म से किसी को दुःख न पहुँचाना ही जीव-दया है।

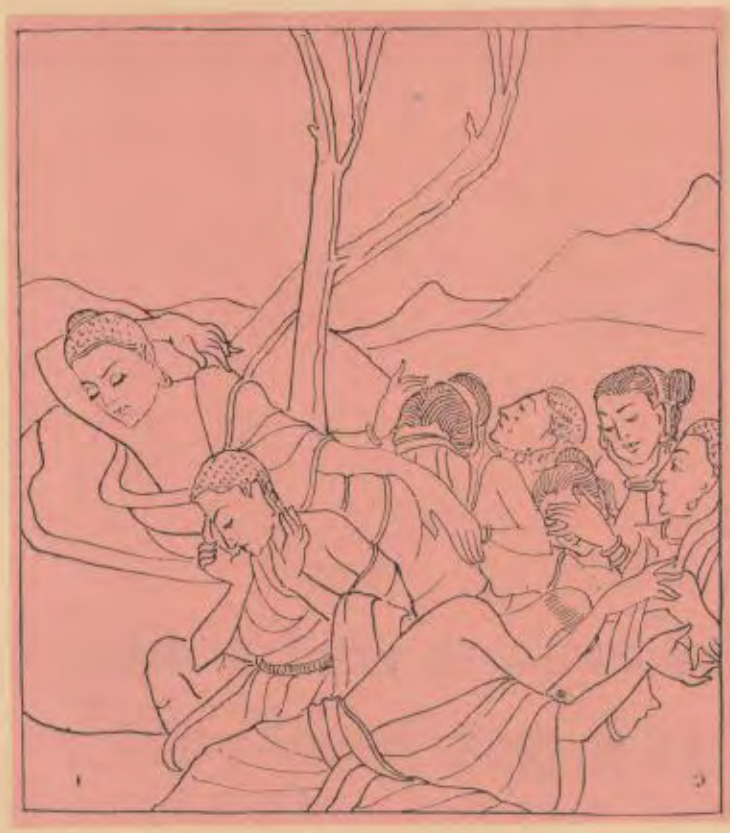

८० वर्ष की अवस्था में कुशीनगर में भगवान् बुद्ध ने शरीर त्याग दिया। उनके अनुयायी भिक्षुओं ने दूर-दूर देशों में जाकर बौद्धधर्म का प्रचार किया।

लंका, जावा, सुमात्रा, चीन, जापान, तिब्बत, ब्रह्मा, श्याम—इन देशों ने बौद्धधर्म को आदर पूर्वक अपनाया।

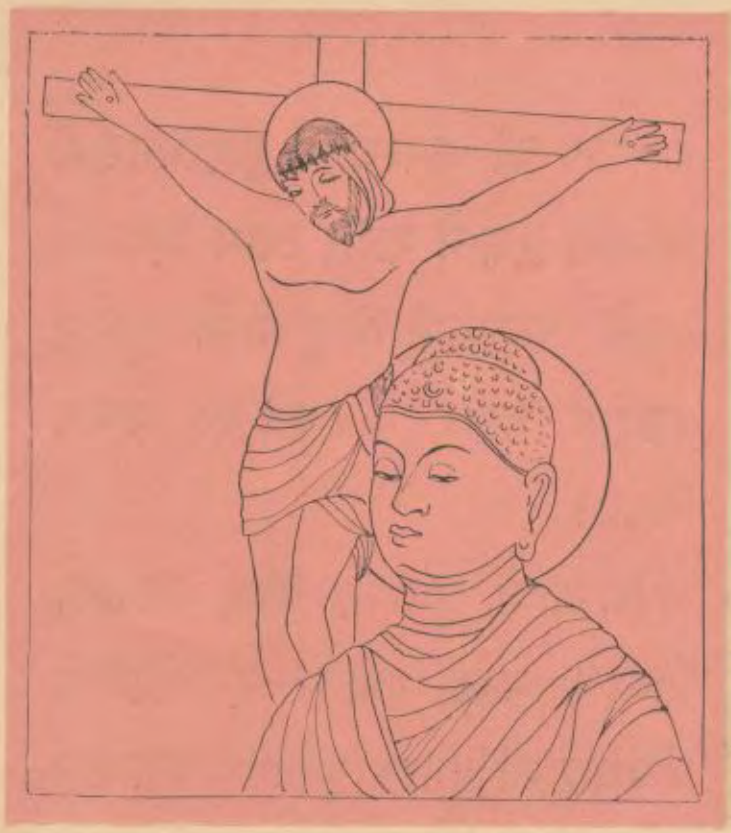

भगवान् ईसा के उपदेश भी भगवान् बुद्ध के उपदेशों से मिलते-जुलते हैं।

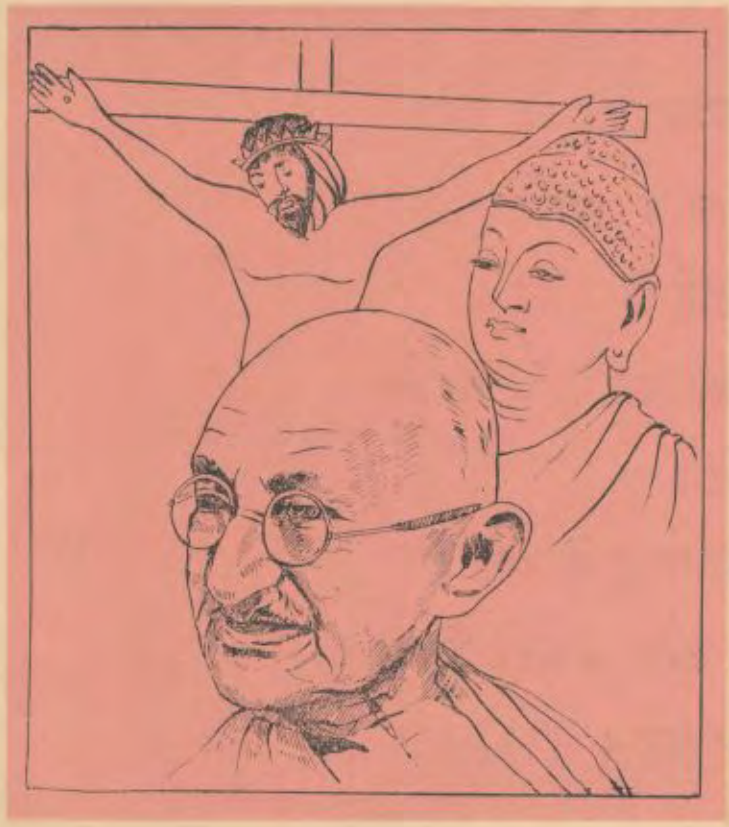

जो बात भगवान् बुद्ध और ईसा ने कही, वही बात राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी भी कहते थे।

उपदेश

१. किसी को दुःख मत दो।

२. बुराई को भलाई से जीतो।

३. दूसरों के दोषों को नहीं, अपने दोषों को देखो।

४. अपने मन को काबू में रखो।

५. ऐसा काम न करो, जिसके लिए पीछे पछताना पड़े।